'बाबूजी' कहानी संग्रह में चित्रित सामाजिक समस्या

डॉ0 राजेंद्र सोमा घोडे,

सहा0 प्राध्यापक, हिंदी विभाग,

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे–411 007(महाराष्ट्र)

***E-mail**-rajughode@gmail.com*

सारांश

आज आधुनिक युग में प्रचार–प्रसार के अनेक साधनों के कारण लोगों में काफी परिवर्तन हुआ है, वे सचेत हुए है, उनमें जागृती हुई है। लोग विचार करने लगे है खुद का अस्तित्व निर्माण करने लगे है। इसके बावजुद भी समाज में आज अनेक प्रकार की समस्या दिखाई देती है। जिसमें शोषण, छुआछूत, संघर्ष, अंधविश्वास, दहेज प्रथा, बेरोजगारी, किसान आत्महत्या, नारी की पीड़ा आदि समस्याओं में आज का मनुष्य पिसता हुआ दिखाई देता है। ऐसी अनेक समस्याओं पर प्रकाश डालते हुए मिथिलेश्वर ने ग्रामीण जीवन को चित्रित करते हुए तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उन्होंने समाज में प्रचलित धारणाओं को नकार कर मूल्यों का प्रतिपादन करते समस्याओं को चित्रित किया है।

***मुख्य शब्द :–** अंधश्रद्धा, प्रथा, शोषण, किसान, वर्ग व्यवस्था, रोजगार, स्त्री, राजनीति आदि।*

प्रस्तावना

अंधविश्वास की समस्या

गाँव के लोग अशिक्षित या सीधे–सीधे होने के कारण किसी भी बात पर तुरंत विश्वास रखते हैं जिस कारण लोग ओझाओं के जाल में फँसकर अपना सब कुछ खो देते हैं। इस समस्या को 'विरासत' कहानी में चित्रित किया है। झकड़ बाबा की ओझाई का जब जग्गू बाबा ने विरोध किया तो झकड़ बाबा ने बड़े ही स्वार्थ से लोगों को समझाते हुए कहा–''मैं तो ओझा हूँ। मुझ पर तो भूत–प्रेत और डायन का असर होता नहीं है। मैं अगर कभी बीमार पड़ता हूँ, तो किसी–न–किसी बीमारी के चलते ही मुझे डॉक्टरों के पास जाना पड़ता हैं।'' इस प्रकार ओझा गाँव के लोगों को फँसाते है लेकिन कोई विरोध करता है तो तुरंत अपना रास्ता भी बदल देते हैं।'पहली घटना' कहानी में मीना के गाँव में एक जगह चबूतरा बनाने की योजना की थी जिसका उद्देश्य केवल गाँव के बीमार लोग दुःखी औरते मन्नते मागेंगीं और उस इलाके के प्रचलित ओझा उन्हें झाड़–फूँक करेंगे। इस प्रकार गाँव के लोगों में भूत–प्रेत, तंत्र–मंत्र जैसे अंधविश्वासों पर विश्वास दिखाई देता हैं।

किसानों की समस्या

अपना देश कृषिप्रधान देश माना जाता है। इसके बावजूद भी किसानों की समस्या पर

कोई ध्यान नहीं देता। आज वर्तमान समय में भी किसान आत्महत्या कर रहा हैं। लेकिन उसका किसी को कुछ लेना देना नहीं हैं। स्वतंत्रता से लेकर आज तक किसानों के विकास के लिए सरकार ने अनेक योजना बनाई लेकिन उसका फायदा किसानों को कितना हुआ इसकी तरफ किसी ने ध्यान नहीं दिया। अधिकांश योजनाएँ केवल कागज पर ही रही किसानों तक पहुँची ही नहीं। अनाज का भाव कम और बी–बीयाने, रासायनिक खत (द्रव्य) का भाव ज्यादा। इसलिए 'नपुंसक समझौते' कहानी का नायक पनीवट और मालगुजारी का रेट दुगुना होने के कारण कहता है–''सरकार यह खेत क्यों नहीं लेती है? क्यों तड़पा–तड़पा कर मार रही हैं?''[2] इस तरह स्वतंत्रता से लेकर आज तक किसानों का शोषण हो रहा है।

मजदूरों के शोषण की समस्या

अपने देश के अनेक गाँवों में बड़े जमींदार, मजदूरों का शोषण करते हुए दिखाई देते हैं। गाँव के लोग अकाल, भूखमारी आदि समस्याओं के कारण उनको जो भी काम मिलता है वह करके अपना उदरनिर्वाह करने की कोशिश करते हैं। लेकिन जमींदार लोग इनकी मजबूरी का फायदा उठाते हैं। काम समय परन करने के कारण 'एक और हत्या' कहानी में हरपालसिंह अपने नौकर जगेसर को बहुत गालियाँ देता है–''साले, तुम्हें पच्चीस रुपये महीना लत्ता–कपड़ा और खाना इसलिए देता हूँ? यह तुम्हारी आज की आदत नहीं, बल्कि रोज की है। एक तो तुम लेट बाजार जाते हों, दूसरे आते भी लेट। ....तुम्हारी सबकी हेकड़ी अब जल्द ही खत्म करूँगा।''[3] इस प्रकार थोड़ीसी भी गलती होने या कभी–कभी न होने पर भी मालिक मजदूरों पर गुस्सा निकालते हैं। काम एक घंटे के बदले दो घंटे करवा के लेते हैं और मजदूरी केवल एक ही घंटे की देते हैं।

बेरोजगारी की समस्या

गाँवों में बहुतांश लोग अशिक्षित होने के कारण गाँवों का विकास नहीं हुआ हैं। किसी गाँवों में स्कूल होते है तो किसी नहीं। जहाँ स्कूल है वहाँ अध्यापक कम होते हैं। इस तरह का चित्रण हमेशा अधिकांश गाँवों में दिखाई देता हैं। इन परिस्थितियों में भी जो पढ़े–लिखे है उनको नौकरी नहीं हैं जिसके कारण वह बेकार है। 'नपुंसक समझौते' कहानी में रमेश स्कूल जाने के नाम पर अपने बड़े भाई से लड़ता है और कहता है–''पढ़–लिखकर क्या करूँगा? तुम्हारी तरह ही बेकार न हो जाऊँगा? सरकार नौकरी देगी नहीं और घर का काम मुझसे फिर होगा नहीं।''[4] इस प्रकार बेरोजगारी की समस्या का चित्रण किया है।

अनैतिक संबंधों की समस्या

स्त्री–पुरुष संबंधों में आज कुछ संबंध ऐसे भी है जिन्हें सामाजिक संबंधों की परिभाषा में हम रख नहीं सकते क्योंकि वे न पति–पत्नी होते है, न प्रेमी–प्रेमिका और न भाई–बहन। इसके बारे में 'विरासत' कहानी में बहुत अच्छी तरह से चित्रण हुआ है। कहानी का नायक झकड़ बाबा ओझा होने के कारण उनके साथ शादी करने के लिए कोई लड़की तैयार नहीं होती। जिसके कारण झकड़ बाबा पूरी तरह औरतों के चक्कर में रहने लगे थे। इसी तरह 'शेष जिंदगी' कहानी में सरना जैसे डाकू भी बुरी औरतों के चक्कर में पड़ता हैं। 'विग्रह बाबू' कहानी में विग्रह बाबू

के भी एक अधेड़ औरत के साथ अनैतिक संबंध थे। बाबूजी कहानी में बाबूजी अपने परिवार को ठुकराकर अन्य औरतों के साथ रहते हैं। वे कहते हैं–''मैं सिर्फ मर्द हूँ और इसीलिए कभी–कभी किसी औरत के साथ रह लेता हूँ। और जिस औरत के साथ रह लेता हूँ उसके साथ कभी जोर–जबरदस्ती नहीं करता हूँ वह औरत जबरन मेरे पास नहीं रहती है। मुझे उसके शरीर की आवश्यकता रहती है तो उसे भी मेरे मर्द शरीर की चाह रहती हैं।''[5] इस तरह कहानियों के माध्यम से अनैतिक संबंध को चित्रित किया हैं।

महँगाई की समस्या

महँगाई के कारण आज सामान्य आदमी का जीना मुश्किल हो गया हैं। समाज में कुछ वर्ग अपने ऐशों–आराम के लिए बहुत अधिक साधन इकट्ठा करने लगा है। लेकिन सामान्य आदमी अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति भी ठीक तरह से नहीं कर पा रहा हैं। अन्य कुछ चीजों के बारें में वह सोच भी नहीं सकते। इस महँगाई के कारण सामान्य व्यक्ति कुछ चीजे खरीदने के लिए भाव कम होने की राह देखता है। 'शेष जिंदगी' कहानी की नायिका भी बढ़ती महँगाई से अच्छी तरह परिचित होने के कारण वह सोचती है–''महँगाई का कोई हिसाब नहीं। कब चीजों के भाव दुगुने–तिगुने से चौगुने हो जायेंगे पता नही।''[6] इस तरह वर्तमान समय में भी महँगाई से सामान्य आदमी परशान होते हुए दिखाई देता हैं।

भ्रष्टाचार की समस्या

समाज में हर जगह हर एक क्षेत्र में भ्रष्टाचार होते हुए दिखाई देते हैं। 'अनुभवहीन' कहानी में डिप्टी कलेक्टर के फॉर्म भरते समय कथा का नायक को उसका सहपाठी मिलता हैं और कहता है–''मुझे दुःख है कि फॉर्म भरते–भरते एज एक्सपायर हो जाने के बाद भी तुम्हें अनुभव नहीं हुआ? तुम क्या समझते हो कि इस बार तुम्हारा हो जायेगा? अरे बच्चू जितनी सीटें खाली हैं, उतनी नियुक्तियाँ हो चुकी हैं। अब यह सिर्फ गोरखधंधा चल रहा है।''[7]इस तरह सरकारी नौकरियाँ सरकार की अलग–अलग योजना आदि में सरकारी अधिकारी, राजनेताओं के द्वारा भ्रष्टाचार होते हुए दिखाई देता है। वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या भ्रष्टाचार ही बन गई है जिसके कारण समाज में लोगों के संबंधों में भी अंतर दिखाई देने लगा है। एक दूसरे पर पहले जो विश्वास था वह आज दिखाई नहीं देता, सब एक–दूसरे को लूटने लगे हैं। अपना या पराया किसी को भी इसमें छूट नहीं हैं।

व्यसनाधीनता की समस्या

वर्तमान समय में किसी न किसी व्यसनाधीनता की समस्या देश के हर एक कोने में दिखाई देती है। इसके कारण बहुत लोगों की जिंदगी दाँव पर लगी है। यह समस्या कम होने के बजाय और बढ़ती जा रही है। गाँवों में शराब की वजह से कितने परिवार रास्ते पर आ गए हैं। 'बाबूजी' कहानी में इसी शराब की समस्या को उठाया है। कथानायक का परिवार जब अपने घर वापस आता है, तो अपने घर की हालत देखकर उनका अपनी आँखों पर विश्वास नहीं होता। ''मुड़कर हमने आंगन के ओसारे में देखा। वहाँ भी कुछ लोग बैठे थे। वे सब षराब पी रहे थे। उनके बीच में खाने की कोई चीज रखी थी, जिसे वे सब बारी–बारी से चख रहे थे और अपनी

पास में रखी बोतलों को खाली करते जा रहे थे।''[8] इस प्रकार समाज में अनेक परिवारों में कुछ लोग शराब की व्यसनाधीनता के शिकार हो गए है। जिससे वे खुद का तो विनाश कर रहे है साथ ही अपने परिवार को भी बर्बाद कर रहे हैं।

बाल–विवाह की समस्या

समाज में प्रचलित अनेक गलत धारणाओं के कारण यह समस्या वर्तमान समय में भी दिखाई देती है। इसके कारण लोग लड़की की उम्र, उसकी पसंद, किसी का भी विचार नहीं करते। माता–पिता के मन में भी हमेशा एक डर होता है। जैसे कि लड़की की उम्र ज्यादा बढ़ेगी तो उसका ब्याह न होगा, दहेज ज्यादा देना पड़ेगा, जिसके कारण ज्यादा तर लोग बाल विवाह करते हैं। 'पहली घटना' कहानी की नायक 'मीना' इसी समस्या का शिकार होती है। ''तेरहवा चढ़ते–चढ़ते ही बाबूजी को उसकी शादी बच्चों के खेल की तरह मनोरंजक लगी थी।''[9] उसे शादी क्या होती है? मतलब शादी का अर्थ समझने से पहले उसके पति का देहांत हो जाता है। इस प्रकार मिथिलेश्वरजी ने बाल विवाह की समस्या को चित्रित किया है।

दहेज प्रथा

समाज में हर जगह दहेज की प्रथा दिखाई देती है। इस प्रथा के कारण समाज में अनेक लड़कियों को अपना बलिदान देना पड़ा है। अपने माता–पिता की आर्थिक स्थिति और अपनी षादी की चिंता को देखकर कुछ लड़कियों ने आत्महत्या की है। किसी लड़कियों ने शादी होने के बाद दहेज की पूर्ति माता–पिता से न होने के कारण या ससुराल के लोगों की बढ़ती माँग से परेशान होकर खुद को मिटा दिया है या ससुराल वाले लोगों ने भी अनेक लड़कियों को मारा है। बहुत बार माता–पिता को दहेज देने की क्षमता न होने कारण अपनी लड़कियों को अयोग्य लड़को या अधेड़ उम्र के लड़कों के हाथ में अपनी लड़कियों का हाथ देना पड़ता है। 'नपुंसक समझौते' कहानी में ''रश्मि की बढ़ती जवानी उसे काटकर रख देती है। पिछले तीन सालों से रश्मि की शादी के लिए वह दौड़ रहा है। लेकिन दहेज की मोटी रकम के अभाव में उसे हर जगह से निराश होकर लौट आना पड़ा।''[10] इस प्रकार समाज में प्रचलित इस प्रथा को मिथिलेश्वर जी ने चित्रित किया है।

अतः हम कह सकते है कि इन कहानियों के माध्यम से ग्रामीण जीवन का यथार्थवादी चित्रण किया है। ग्रामीण शिक्षित युवकों की बेरोजगारी पर व्यंग्य करते हुए सोचने को मजबूर किया है। इतना ही नहीं तो रूढ़ि–परंपरा, अंधविश्वास, दहेज प्रथा आदि समस्याओं पर प्रकाष डालते हुए लोगों को सचेत किया है। उन्होंने ग्रामीण जीवन से जुड़े हुए सभी वर्गों के लोगों का जीवन कहानियों के माध्यम से उजागर करते हुए ग्रामीण लोगों की मानसिकता, अंधविश्वास आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

संदर्भ ग्रंथ

1. *विरासत*–मिथिलेश्वर, पृ. 41
2. *नपुंसक समझौते*–मिथिलेश्वर, पृ.14

3. *एक और हत्या*–मिथिलेश्वर, पृ.22
4. *नपुसंक समझौते*–मिथिलेश्वर, पृ.18
5. *बाबूजी*–मिथिलेश्वर, पृ.94
6. *शेष जिंदगी*–मिथिलेश्वर, पृ.52
7. *अनुभवहीन*–मिथिलेश्वर, पृ.9
8. *बाबूजी*–मिथिलेश्वर, पृ. 91
9. *पहली घटना*–मिथिलेश्वर, पृ.104
10. *नपुंसक समझौते*–मिथिलेश्वर, पृ. 20